International Journal of Latest Emerging Multidisciplinary Research
Volume 1 ~ Issue 1 (Jan- June 2025) pp: 01-05
www.ijlemr.net

Research Paper

भक्ति काल का हिन्दी साहित्य में योगदान

मनोज गढवाल
शोधार्थी
हेमवतीनंदन बहुगुणा,
गढवाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर।

हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भारत में मुस्लिम साम्राज्य के कमिक उत्थान पतन का युग है। कोई भी साहित्य युग परिस्थितियों से प्रभावित हुए बिना नही रहता है। किन्तु भक्तिकालिन साहित्य परिस्थितियों से बहुत प्रभावित हुआ। भक्तिकाल मे जिस साहित्य की रचना हुई वह अधिकांश पद्य में अर्थात छंदोबद्व काव्य रुप में हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने भी इसकी समय सीमा सम्बत् 1375 से 1700 तक माना है। इस काल में हिन्दी काव्य का श्रेष्ठतम अंश उपलब्ध होता है। इस काल में प्रबन्ध काव्य,मुक्तक काव्य तथा गीतिकाव्य की रचना हुई । हिन्दी भाषा और साहित्य में भक्तिकालीन परिवेश में उच्च कोटी का साहित्य रचने की पृष्ठभूमि ही नही बल्कि परम विकास प्राप्त किया। कबीर,सूरदास तथा तुलसीदास की रचनाऐं साहित्यिक परिवेश की अनुपम देन है।[1]

भक्तिकालीन साहित्य चरमोत्कर्ष का काल था। हिन्दी साहित्य के भक्तिकालीन समय को साहित्यिक क्षेत्र का स्वर्ण युग माना जाता है। भक्तिकाल निस्संदेह हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग है। इस काल का साहित्य अपने पूर्ववर्ती साहित्य एवं परवर्ती साहित्य से निश्चित रुप से उत्कृष्ठ है। भक्तिकाल से पूर्व हिन्दी के आदिकाल अथवा वीरगाथा काल में कविता वीर और श्रृगांर रस प्रधान थी। जीवन की अन्य दिशाओं और क्षेत्रों की और कवियों का ध्यान गया ही नही। इस काल के चारण कवि राज्याश्रित थे और उनकी कविता अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशस्ति मात्र थी। सर्वोपरी इस काल के साहित्य की प्रमाणिकता भी संदिग्ध है।[2]

भक्तिकालीन समय को साहित्यिक क्षेत्र का स्वर्णयुग माना जाता है। भक्तिकाल में गद्य का प्रायः अभाव सा ही रहा है, परन्तु अनुभूति की गहराई एवं भाव प्रवणता के क्षेत्र में आधुनिक युग का साहित्य भक्तिकाल के साहित्य की समकक्षता में नही रखा जा सकता है।[3]

.भक्तिकालीन साहित्य में निर्गुण उपासना एवं सगुण उपासक दोनो भक्तों रहस्यवादी यर्थाथवादी एवं आदर्शवादी सभी विचारधारा के समर्थकों को अपने मनोनुकूल सामग्री यर्थात रुप में प्राप्त हो जाते है यही इस काल का महत्वपूर्ण आकर्षण है। इस काल के काव्य जीवन सापेक्ष जनता के अधिक निकट है। किसी अन्य काल खण्ड में काव्य को जनता के इतना निकट नही देखा जाता है। सर्वधर्म समभाव की प्रतिष्ठा के कारण धार्मिक संकीर्णता में कमी आई । कबीर की समन्यवादी दृष्टि,जायसी आदि सूफियों की उदारता सूरदास,मीराबाई,रसखान तक आते–आते व्यापक जीवन दृष्टि बदल गई।

भक्तिकाल में काव्य धारातीन मार्गों में बहती हुई दिखती है–निर्गुण संत काव्य,निर्गुण प्रेमख्यान काव्य,सगुण भक्तिकाव्य।[4]

<u>निर्गुण संत काव्य</u> :–निर्गुण धारा भी दो भागों में बांटी गई है– संत काव्य व सूफी काव्य।

सगुण धारा– जबकी सगुण धारा में राम काव्य व कृष्ण काव्य ृके रुप में विभाजित किया है इन चारों का प्रतिनिधित्व करने वाले चार प्रमुख कवि निम्न रहे –

1 कबीरदास–संत काव्य व ज्ञानाश्रयी शाखा

2 जायसी–सूफि काव्य धारा व प्रेमाश्रयी शाखा

3 तुलसीदास– राम काव्य धारा

4 सूरदास– कृष्ण काव्य धारा।[5]

भक्तिकाल में सन्त काव्य धारा का अपना विशिष्ट योगदान रहा है।यह युग सामाजिक,राजनितिक,धार्मिक व आर्थिक दृष्टि से उथल–पुथल का युग था। भक्तिकाल के सन्त कवियों ने आत्मगौरव को महत्व देकर वैचारिक क्रांति का सूत्रपात किया।संत साहित्य में ही नही वरन सकल भारतीय जीवन में गुरु को अत्यन्त गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है,क्योंकी गुरु को ही अन्धकार,अज्ञान का निरोधक बताया गया है।सन्त कबीर पढ़े लिखे नही थे,उन्हें जहॉ से जो अच्छा लगा उन्होने वहॉ से ग्रहण किया।शायद यही कारण है उनके काव्य पर नाथपंथीयों,अद्वैतवाद,वैष्णव,बौद्व धर्म इत्यादी सम्प्रदायों का प्रभाव देखा जा सकता है। वही तुलसीदास ने धर्म को कोरा आदर्शवाद नही वरन मानव को भौतिक धरातल पर जीना सिखाता है ऐसा माना।उन्होने रामभक्ति रुपि औषधि से रोगो से मुक्ति का मार्ग बताया।[6]

भक्तिकाल के काव्य में हम आचरण की शुद्वता को देखते है। तुलसीदास के काव्य में वर्णित व्यक्तिक पारिवारिक,सामाजिक आचरण के आदर्श प्रत्येक युग में प्रत्येक मानव के लिए अनुकरणीय है। कबीर जी जैसे संतो द्वारा दिया गया काव्य यदि हम अपने जीवन में डाल ले तो हम उन सभी बुराईयों से छुटकाारा पा सकते हैं जो हमारे विकास में अवरोधक है।[7]

सूफी प्रेम काव्यों में हिन्दू लोक संस्कृति की वैयक्तिकता एवं सामाजिकता का चित्रण हुआ है। हिन्दु लोक संस्कृति में व्याप्त अंधविश्वासों–विश्वासों, तीर्थ,व्रतआदि का चित्रण हुआ है।लोकोत्सव लोकविवाह द्वारा हिन्दु लोक संस्कृति में चली आ रही परम्परागत प्रेम कहानियों की पृष्ठभूमि तथा इस्लाम धर्म की मान्यताओं को समन्वित करके प्रस्तुत किया गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है ”प्रेमस्वरुप ईश्वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दु और मुस्लमानों दोनो को मनुष्य के सामान्य रुप में दिखाया और भेदभाव के दृश्यों को हटाकर पीछे कर दिया।”सूफी काव्य में धार्मिक सहिष्णुता दृष्टिगत हाती है सूफी कवियों की लौकिक दृष्टि बहुत सजग थी।उन्होने अपने आस पास के विस्तृत वातावरण को बखुबी प्रकट किया है। उनकी रचनाओ में भारतीय जीवन या संस्कृति का बड़ा सजीव चित्रण हुआ है सामाजिक प्रगतिशीलता का प्रतीक है। संतो ने जिस साहित्य की रचना की वह सच्चे अर्थों में जन साहित्य है।भाषा व विचार बोध की दृष्टि से व शुद्व रुप में लोक की वस्तु है डॉ श्यामसुन्दर दास के शब्दो में –”जिस युग में कबीर,जायसी,तुलसी,सूर जैसे रससिद्व कवियों और महात्माओं की दिव्यवाणी उनके अन्तः करणो सेनिकलकर देश के कोने कोने में फैली थी,उसे साहित्य

के इतिहास में सामान्यतः भक्ति युग कहते है।"यह काल हिन्दी काव्य की चतुर्मुखी उन्नति का काल था। काव्य सौष्ठव,सामान्यवाद,भारतीय संस्कृति,भावपक्ष,कलापक्ष और संगीत आदि सभी दृष्टियों से यह काव्य सर्वोतम है। संत काव्य रचनाए सम्पूर्ण है। जहॉ गुरु की महिमा का सुंदर चित्रांकन किया, वही माया की व्यर्थता का यर्थात चित्रण। संत रचनाओं में नारी विषय चिंतन,नैतिक भावना की प्रबलता मानववादी चिंतन इत्यादी दिखाई देता है।

भक्तिकाल से पूर्व हिन्दी के आदिकाल अथवा वीरगाथा काल में कविता वीर और श्रृगांर रस प्रधान थी। जीवन की अन्य दिशाओं और क्षेत्रों की और कवियों का ध्यान गया ही नही। इस काल के चारण कवि राज्याश्रित थे और उनकी कविता अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशस्ति मात्र थी। सर्वोपरी इस काल के साहित्य की प्रमाणिकता भी संदिग्ध है।[2]

भक्तिकालीन समय को साहित्यिक क्षेत्र का स्वर्णयुग माना जाता है। भक्तिकाल में गद्य का प्रायः अभाव सा ही रहा है, परन्तु अनुभूति की गहराई एवं भाव प्रवणता के क्षेत्र में आधुनिक युग का साहित्य भक्तिकाल के साहित्य की समकक्षता में नही रखा जा सकता है।[3]

भक्तिकालीन साहित्य में आध्यात्मिकता व साहित्यिकता का समन्वय है। भक्तिकालीन साहित्य में लोक काल की भावना भी निहित है।उनकी रचनाओं में भारतीय जीवन व संस्कृति का बड़ा सजीव चित्रण हुआ है।भारतीय सामाजिक जीवन के प्रतीक त्यौहारो,उत्सवों व संस्कारों का इनकी रचनाओं में समावेश देखा जा सकता है।

<u>भक्तिकालीन गद्य साहित्य</u> :– गद्य साहित्य के क्षेत्र में भी यह काल उत्थान काल रहा है।भक्तिकालीन गद्य साहित्य को चार भागों में विभाजीत कर सकते है।

1 ब्रज भाषा में रचित गद्य साहित्य

2 खड़ी बोली में रचित गद्य साहित्य

3 दक्खिनी में रचित गद्य साहित्य

4 राजस्थानी में रचित गद्य साहित्य

भक्तिकाल में साहित्य गद्य बहुत कम परिणाम में रचित है। इस समय की ललित ग्रन्थ रचनाओं की संख्या 20 से अधिक नही है।

भारतीय धर्म साधना व चेतना के इतिहास में हिन्दी संत काव्य का प्रमुख स्थान है। हिन्दी साहित्य में संत काव्य नें साहित्य एवं कला की अभिनव मान्यताए संस्थापित की।अपने तात्कालिन युग की धार्मिक विसंगति को दूर कर इन संतों ने सास्कृतिक सामंजस्य को स्थापित किया। उन्होने अपने रचना के बल द्वारा सत्य,क्षमा,दया,त्याग,विनय,समता,कथनी,करनी आदि सामाजिक विश्वासों की परिपाटी ही बदल दी।अंत मे हम कह सकते हैकि हिन्दी साहित्य के 1375 से 1700 के बीच लिखा गया साहित्य कालजयी साहित्य है।इसको स्वर्ण युग कहना अतिश्योक्ति नही हैं।यह साहित्य ख्याति के लिए नही

बल्कि मांग के अनुरुप आचरण की सभ्यता व सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना को ध्यान में रखकर लिखा गया ।

इस काल में हिन्दी काव्य का श्रेष्ठतम अंश उपलब्ध होता है। इस काल में प्रबन्ध काव्य,मुक्तक काव्य तथा गीतिकाव्य की रचना हुई । हिन्दी भाषा और साहित्य में भक्तिकालीन परिवेश में उच्च कोटी का साहित्य रचने की पृष्ठभूमि ही नही बल्कि परम विकास प्राप्त किया। कबीर,सूरदास तथा तुलसीदास की रचनाऐं साहित्यिक परिवेश की अनुपम देन है।[1]

कला के लिए ही नही बल्कि जीवन को परिष्कृत करने के लिए है। कला की सार्थकता मानव की पीड़ा दूर कर उसे प्रसन्न व सुखी बनाने में है।इसी भक्तिकाल में साहित्य कला की यह विशिष्ठ चेष्ठा हिन्दी साहित्य के अन्य युगों की अपेक्षा कई गुना अधिक देखी जाती है। भावपक्ष व कला पक्ष काव्य रुप की दृष्टि से अन्य कालों की अपेक्षा भक्तिकाल सर्वोत्कृष्ट हैं। अतः निःसंदेह यह स्वर्णकाल था जिसका हिन्दी साहित्य में अद्वितीय योगदान है।

इस काल में हिन्दी काव्य का श्रेष्ठतम अंश उपलब्ध होता है। इस काल में प्रबन्ध काव्य,मुक्तक काव्य तथा गीतिकाव्य की रचना हुई । हिन्दी भाषा और साहित्य में भक्तिकालीन परिवेश में उच्च कोटी का साहित्य रचने की पृष्ठभूमि ही नही बल्कि परम विकास प्राप्त किया। कबीर,सूरदास तथा तुलसीदास की रचनाऐं साहित्यिक परिवेश की अनुपम देन है।[1]

हिन्दु लोक संस्कृति में व्याप्त अंधविश्वासों–विश्वासों, तीर्थ,व्रतआदि का चित्रण हुआ है।लोकोत्सव लोकविवाह द्वारा हिन्दु लोक संस्कृति में चली आ रही परम्परागत प्रेम कहानियों की पृष्ठभूमि तथा इस्लाम धर्म की मान्यताओं को समन्वित करके प्रस्तुत किया गया है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने लिखा है "प्रेमस्वरुप ईश्वर को सामने लाकर सूफी कवियों ने हिन्दु और मुस्लमानों दोनो को मनुष्य के सामान्य रुप में दिखाया और भेदभाव के दृश्यों को हटाकर पीछे कर दिया।

संतो ने जिस साहित्य की रचना की वह सच्चे अर्थों में जन साहित्य है।भाषा व विचार बोध की दृष्टि से व शुद्व रुप में लोक की वस्तु है डॉ श्यामसुन्दर दास के शब्दो में –"जिस युग में कबीर,जायसी,तुलसी,सूर जैसे रससिद्व कवियों और महात्माओं की दिव्यवाणी उनके अन्तः करणो सेनिकलकर देश के कोने कोने में फैली थी,उसे साहितय के इतिहास में सामान्यतः भक्ति युग कहते है।"यह काल हिन्दी काव्य की चतुर्मुखी उन्नति का काल था। काव्य सौष्ठव,सामान्यवाद,भारतीय संस्कृति,भावपक्ष,कलापक्ष और संगीत आदि सभी दृष्टियों से यह काव्य सर्वोतम है। संत काव्य रचनाए सम्पूर्ण है। जहॉ गुरु की महिमा का सुंदर चित्रांकन किया, वही माया की व्यर्थता का यर्थात चित्रण। संत रचनाओं में नारी विषय चिंतन,नैतिक भावना की प्रबलता मानववादी चिंतन इत्यादी दिखाई देता है।

<u>सन्दर्भ</u> :–

1 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल–चिन्तामणि भाग–1 पृष्ठ 26

2 भगवत स्वरुप मिश्र–कबीर ग्रंथावली पृष्ठ 414

3 हिन्द साहित्य का इतिहास– बाबु गुलाब राय

4 वही

5 हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास,सम्पादक मण्डल एन सी आर टी पृष्ठ 47

6 रविन्द्र कुमार सिंह –संत काव्य की सामाजिक प्रासंगिकता पृष्ठ 91

7 मध्यकालीन काव्य कुंज सम्पादक डॉ रामसजन पाण्डे पृष्ठ 23

*Corresponding Author:मनोज गढवाल